ख्यात, बही, वचनिका में तत्कालीन राजस्थानी भाषा का चित्रण

किरण राजपुरोहित

शोधार्थी –राजनीति विज्ञान

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

माधव विश्वविद्यालय पिण्डवाड़ा(राज.)

शोध पत्र सार –

राजस्थानी एक पुरातन, वृहद और संपूर्ण भाषा रूप में विद्यमान है जिसका अपना विदित इतिहास, लिपि व युगानुरूप प्रचुर साहित्य है। लेकिन फिर भी लगातार मातृभाषायी मौलिक अधिकार की मांग के बाद भी इसे अभी तक संवैधानिक मान्यता नहीं दी गयी है और मातृभाषा में शिक्षा अधिनियम 2009 के बाद भी राजस्थान की प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्ष में राजस्थानी भाषा को स्थान नहीं मिला है। जबकि भारत के अन्य राज्यों में उनकी मातृभाषा प्रथम भाषा के रूप में मान्य है भले वह राजस्थानी भाषा के जितनी समृद्ध नहीं है। इसे हिन्दी की बोली करार पटक दिया गया है । इसीलिए इसके एक हजार साल के वृहतर इतिहास के प्रमाण इस पत्र में प्रस्तुत किये जायेगें जिससे यह प्रामाणित हो कि इसे मान्यता देना आवश्यक है।

मेरे शोध का विषय 'राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता – एक राजनैतिक अध्ययन' है। इसी से जुड़े इस शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थानी भाषा की ऐतिहासिकता के प्रमाण सामने लाना है जिससे इस बात को और बल मिले कि यह केवल बोली नहीं सदियों से एक स्वतंत्र भाषा है जिसे आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाना चाहिए। इस भाषा के अपने कईं पुराअभिलेख, ग्रंथ, शब्दकोष व विपुल साहित्य है। 'दारोगा दस्तरी बही', 'अचलदास खीची री वचनिका' व 'ठिकाना पाल री ख्यात' के माध्यम से लिखित राजस्थानी भाषा के एक हजार साल के प्रमाण दिये जायेगें।

प्रस्तावना –

हमारी वैदिक संस्कृति से छान्दस, इसके बाद लौकिक संस्कृत का विकास सामने आता है। विविध प्राकृत रूपों के साथ पाली और अपभ्रंश के पश्चात् राजस्थानी का उद्भव होता है। राजस्थानी भाषा आधुनिक इंडो आर्यन भाषा परिवार की एक समर्थ भाषा है जिसके तार वैदिक संस्कृति से जुड़े हुए हैं। राजस्थानी भाषा के प्रमाण ऋग्वेद से मिलने प्रारंभ होते हैं। तब से ही यह भाषा विभिन्न नामों के साथ विकासशील रहते मरु भाषा से होते हुए आज राजस्थानी कहलाती है।

'मरु' सबद रो उल्लेख ऋग्वेद मांय हुयो है। मरुभासा राजस्थानी वैदिककालीन लोकभासावां सुं आपरो अस्तित्व लियो है। अै लोकभासावां ऋग्वेद रै रचेतावां नैं भी प्रभावित करी है।[1]

8 वीं शती में उद्योधन सूरी के लिखे ग्रंथ 'कुवळय माल' से मरुभाषा लिखे होने प्रमाण मिलने प्रारंभ होते हैं जिसमें 'मरुभाषा' के रूप में विदित होती थी।

'कुवळयमाला 9वीं शती अर 'आइने अकबरी' आं नावां नैं प्रमाणित करै। [2]

इसके साथ ही विभिन्न पुरालेख भी प्राप्त होते रहे हैं जो तत्कालीन राजस्थानी भाषा में लिखे हुए हैं। वचनिका, रासो, विरुद, वात, ख्यात, पट्टा, परवाना, रुक्का, बही, हकीगत, पानड़ी, शिलालेख, दवावैत, रोजनामचो आदि ऐसे सैकड़ों हस्तलिखित पुरालेख हैं जिसमें तत्कालीन राजस्थानी अर्थात् महाजनी, हाडौती, मरुभाषा, डिंगल, पिंगल, मेवाड़ी, मारवाड़ी में लिखित है। इस रूप में राजस्थानी भाषा लगभग एक हजार वर्षों के इतिहास में अपने स्पष्ट प्रमाण से स्थिति सुनिश्चित करती है। उपरोक्त विभिन्न समयों के इन अभिलेखों व पुरालेखों से राजस्थानी भाषा व उसकी अपनी लिपि का लगातार चलन में होना भी प्रामाणित होता है। ये पुरालेख आज भी सैकड़ों की संख्या में मौजूद है जो विभिन्न अभिलेखागारों में सुरक्षित हैं। इन साक्ष्यों में राजस्थानी भाषा का होना यह सिद्ध करता है कि लगभग 800–1000 वर्षों के बीच यह भाषा जन समुदाय ही नहीं बल्कि प्रशासन व दस्तावेजों की भी भाषा रही है।

राजस्थान अर्थात् तत्कालीन भारतवर्ष के उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में लिखने के लिए मौड़ी लिपि के साथ देवनागरी का भी प्रयोग होता था। बहियों, खरीतों आदि में कईं तरह से खतौनी करने की परंपरा रही है लेकिन साथ ही देवनागरी का भी प्रयोग भी होता था। इससे विदित होता है कि दोनों ही लिपियां प्रचलन में रही होगी। यह लिखने वाली की इच्छा पर निर्भर रहा होगा कि उसने वह बात किस लिपि में लिखी या लिखवाई। राजस्थान में जलदान, विद्यादन, अन्नदान, भवनदान, धरतीदान की पुरातन परम्परा रही है। इसलिये धनाढ्य व श्रेष्ठि वर्ग ग्रंथों की प्रतिलिपि बनवा कर कथा वाचकों, मंदिर व पाठकों को भेंट करते थे। यह बढिया व सहज उपलब्ध लिपिकारों बिना संभव नहीं रहा होगा। राजस्थान में बढिया लिपिकार व ग्रंथकार रहे होगें। लिखा समझने के प्रवृत्ति सामान्यजन में अधिक रही होगी तभी लिपिकार व ग्रंथकार अस्तित्व में आये होंगे।

देलवाड़ा (देवकुल पटनायक), अजयमेरु(अजमेर), जयसलमेरु(जैसलमेर) आदि में ऐसे लिपिकार थे जो रचनाकार के मूल ग्रंथ या पूर्ववर्ती ग्रंथों की पाण्डुलिपियों को यथारूप लिखते थे।[3]

मरुभाषा अर्थात् आज की राजस्थानी भाषा के लिखित प्रयोग के प्रमाण विभिन्न शिलालेखों से प्राप्त हुए हैं। मरुभाषा के साथ इसकी उपभाषाएं भी समृद्ध रही हैं। मेवाड़ी साहित्य ही नहीं आमजन के व्यवहार की भाषा थी इसलिए राजाज्ञा भी उसी में प्रसारित की जाती थी।

राजस्थानी की बोली मेवाड़ी में लेख लिखने राजाज्ञा लिखना 1489 ई. में आरंभ हुआ। पहला प्रमाण एकलिंग जी मंदिर की प्रशस्ति महाराणा कुंभा जिन्होंने मेवाड़ी में नाटक लिखे थे, के पुत्र महाराणा रायमल 1472 ई.–1530ई. की राजाज्ञा है कि आमजन के लिए तत्कालीन राजस्थानी अर्थात् मेवाड़ी में प्रशस्ति लिखी जाये। प्रशस्तिकार है महेश दशोरा।[4]

राजस्थानी भाषा में लिखित पुरालेख सामग्री में महाजनी, मोड़ी, हाडौती, मेवाड़ी, मारवाड़ी आदि लिपि में लिखित है। राजस्थानी भाषा में लिखित अन्य प्रमुख इतिहास स्रोत विभिन्न राजपूत राज्यों में लिखी गई बहियां है। सबसे प्राचीन बही जो प्राप्त होती है वह राणा राजसिंह–1652–1680 ईस्वी के समय की है। इसके बाद दूसरी प्राचीन महत्वपूर्ण बही 'जोधपुर हुकुमत री बही' है। [5]

की वर्ड – राजस्थानी भाषा, भाषा, बही, ख्यात, वचनिका, लिपि।

1

सर्वप्रथम 'ठिकाना पाल री ख्यात' को प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। ठिकाना पाल सोभावत जैतमालोत राठौड़ों का तत्कालीन जोधपुर रियासत में महत्वपूर्ण ठिकाना था।

'ख्यात' एक प्रशासनिक दस्तावेज होता है जिसमें उस समय के क्रियाकलापों को लिपिबद्ध कर सुरक्षित रखा जाता है। यह महत्वपूर्ण दस्तावेज होते हैं जिससे न केवल इतिहास संरक्षित रहता है जागीर–गांवों का देने का भी लिखित रिकॉर्ड होता है।

–'ठिकाना पाल री ख्यात' जिसमें संवत् 1415 तदनुसार ई. स. 1357 में राव जैतमाल की मृत्यु से लेकर पाल के ठाकुर रणजीतसिंह सं. 1952 तक का वृत्तांत प्रस्तुत किया है। इस ख्यात को 19 वीं शताब्दी के अन्त तक वापिस लिपिबद्ध किया गया। [6]
सोभावत जैतमालोतों ने प्रधान सिकदार, ड्योढीदार, हाकम, कोतवाल, रसोड़े की दारोगाई, मोदीखाने, कोतवाली, दुर्गाध्यक्ष आदि शीर्ष व प्रतिठित पदों पर रहते हुए उन्होंने स्वामी भक्ति का परिचय दिया। [7]
महराजाओं के प्रति स्वामीभक्त रहते हुए सोभावत राठौड़ों ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की थी।इससे प्रसन्न होकर कई ठिकाने इनायत किये गये।

मोटा राजा उदयसिंह ने पाल ठिकाना आदि गांवों का पट्टा 25000 रु. रेख सुभकरण को वि. सं. 1640 में दिया गया। [8]
तत्कालील राजपूताना या राजस्थान के राज्यों में समय समय पर रिकॉर्ड के कई तरीके अपनाये जाते रहे हैं।
मारवाड़ के इतिहास लेखन के लिए जोधपुर राज्य की ओर से 1888 ई. में इतिहास कार्यालय की स्थापना की गई थी। राजकीय रेकॉर्ड के अलावा मारवाड़ के विभिन्न ठिकानों व गांवों से भी सामग्री एकत्रित की गई। [9]

इससे विदित होता है कि 1888 ईस्वी से पूर्व जिस भाषा में रेकॉर्ड किया गया था वो मंगवाया गया। ज्ञात रहे रेकॉर्ड रखने का चलन सदियों पुराना था। यह अपने–अपने गांवों–ठिकानों में ही पृथक रूप से सुरक्षित था। इनको एकत्रित कर संरक्षित करने के लिए मारवाड़ रियासत अर्थात् जोधपुर में एक इतिहास कार्यालय की स्थापना की गई।
– ठिकाने के ठाकुरों ने अपने संग्रह में संग्रहित पट्टे , परवानों, रूक्के, चारणों व कुलगुरुओं की बहियों के अनुसार अपने–अपने ठिकानों को इतिहास उक्त कार्यालय भेजा। [10]

1954 ईस्वी में आजादी के बाद एक बार फिर इतिहास के संरक्षण के लिए इन ख्यातों को राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी जोधपुर द्वारा एकत्रित करना प्रारंभ किया गया। खोज व शोध के द्वारा ठिकाना पाल की ख्यात को संपादित कर प्रकाशित किया गया। इस ख्यात के सम्पादन के लिए प्राप्त सभी ख्यात ग्रंथों और इतिहास पुस्तकों का अध्ययन किया गया। शत–प्रतिशत प्रामाणिकता के लिए ठिकाना पाल ही नहीं जोधपुर के आस पास के क्षेत्रों के शिलालेखों को भी खोजा गया।

'ठिकाना पाल ख्यात' री भाषा शैली सरल और प्रवाहमयी है। इसमें राजस्थानी का मारवाड़ी स्वरूप स्पष्ट रूप से झलकता है। ख्यात की भाषा स्पष्ट व सरल होने के कारण शब्दार्थ लगाने की आवश्यकता महसूस नहीं की गई। [11]

उपरोक्त कथन फिर से यह सिद्ध करता है कि राजस्थान के बड़े भूभाग पर केवल राजस्थानी का ही चलन था। यह भाषा ना केवल बोलचाल में बल्कि साहित्य सृजन व प्रशासनिक रेकॉर्ड आदि सारे काम इसी भाषा में होते थे।

'ठिकाना पाल ख्यात' के कुछ मूल अंशों पर दृष्टि डालने से इसकी भाषा राजस्थानी होना निश्चित होगा–

'राव जैतमालजी सिवाणे ठिकाणो बांदियो ने सोढ़ा वगैर राजपूतां ने मार जमीं दाबी ने मांडल वगैर रे बादसाह सूं झगड़ा जीतिया। दिल्ली मंडल में बहादुरी रो बड़ो नामून थो और पीठवे चारण रो कलंक झाड़ियो और दसवें सालगराम रो बिरद पायो। सरवड़ी गांव शंकर मनणे ब्राह्मण ने परब में दान दियो। और भी कवी लोकां ने लाख पसाव वगैर बोत सा दिया। संवत् 1415 भतीज जगमालजी रे हाथ सूं धारातीर्थ प्राप्त हुवा।– सोभावत री ख्यात, बस्ता नं. 17/74। [12]

संवत् 1415 अर्थात् ईस्वी सन् 1358 के बाद लिखा यह दस्तावेज है जिसकी भाषा तत्कालीन मारवाड़ी है जो आधुनिक राजस्थानी की उपभाषा है। कोई भी बालक भी इसे पढ कर यह कह सकता है कि यह राजस्थानी है।

इसी भांति इसी ख्यात से लिया गया एक और गद्यांश राजस्थानी भाषा को प्रामाणित करता है।

–जैतमालजी रे बेटा बीजल जी तिकां सिवाणे राज कियो और पेला पिता री बंदगी आछी तरां सूं कीवी ही जिण सूं जेतमालजी में जो सिद्दाई ही वा बीजलजी ने दीवी तरां उणां कही के हूं संसार छोड सूं जद जैतमालजी कही के थारे सन्तान हवां रे बाद सन्यास लीजे तो पिता री आज्ञा रे कंवर कींक हुसियार हुवा जद पाट दे भाई हापा ने ठिकाणा री भोलावण दी और गांव सीलोर राजगुरु पुरोहित नाहरमाराड़ोत ने दान दियो बाद में संवत् 1449 में सन्यास लियो। बीजल जी रा कंवर बडा सतोजी तिणा री 2 पीढ़ी सिवियाणे राज कियो हमार उणां री औलाद में गांव भंवराणी में सिवाणचिया जैतमाल बाजे है।– सोभावत री ख्यात, ग्रंथांक 3455/74/16।[13]

इसी क्रम में वि. सं. 1744 तदनुसार ईस्वी सन् 1687 में जोधपुर महाराजा द्वारा पाल गांव के सोभावत दयालदास को पट्टा दिया । उस ताम्र पत्र का फोटो व उस पर लिखे का हूबहू लिपिबद्ध रूप यहां राजस्थानी भाषा व लिपि के प्रमाण के तौर पर दिया जा रहा है।

!! श्री परमेसर जी स्त छै जी–

श्री ब्रह्म जी षंडो सही

!!:!! सिध श्री माहाराजा धीराज महाराजा श्री अजीत सींघ जी वचनायत था सोभावत दयालदास वेणीदास कुसला सोभावत रानु मया कर चाकर राषियो चाकरी फरमावसी सो करसी नजर करन पावे गांव वीनां हुकम संसण देण न पावे–

परगने जोधपुर री गांव पटे दीयो छे...। [14]

उपरोक्त पट्टे में तत्कालीन मारवाड़ी अर्थात् राजस्थानी अत्यंत सुथरे रूप में दिख रही है।

इसी क्रम में महाराजा श्री सुरतसिंह बीकानेर का पत्र जो दोढीदार भगवानदास के नाम वि. सं. 1871 तदनुसार ई. सन् 1814 को लिखा गया। इसकी भाषा राजस्थानी है व लिपि नागरी है जो पठनीय है। इस पत्र से यह प्रामाणित होता है 1814 ईस्वी में न केवल जोधपुर बल्कि बीकानेर के राजकाज व पत्र व्यवहार की भाषा राजस्थानी ही थी। इससे अनुमान लगाया जा सकत है कि उन सदियों में राजस्थानी अपने चरम रूप में विस्तारित थी।

!! श्री लक्ष्मीनारांयण जी

!! स्वस्ति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि महाराजा श्री सूरतसिंह जी माहाराज कुवार श्री रतनसिंघ जी वचनात् डोढीदार भगवांनदास दिसी सु प्रसाद वंचै अप्रंच थांहांरी तरपा रा समाचार .....। [15]

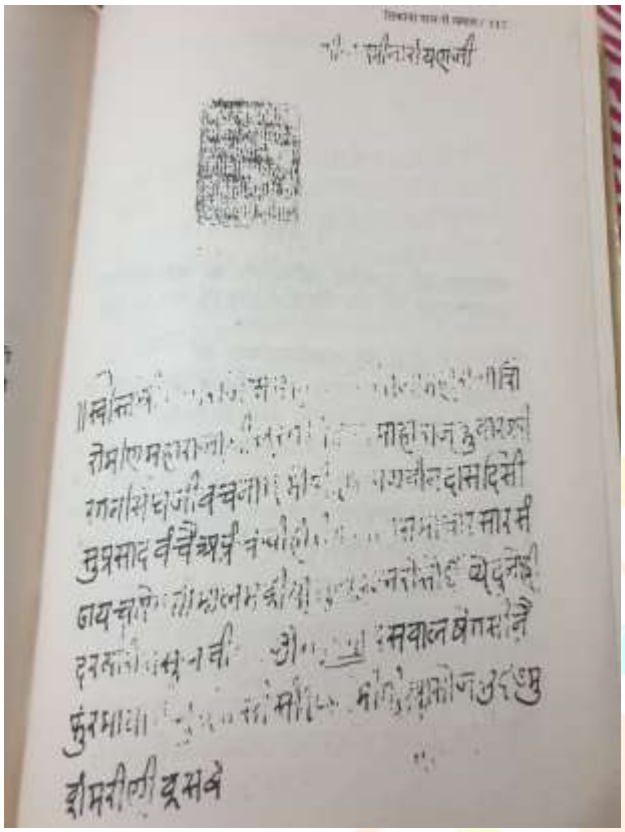

इसके साथ ही ईडर के महाराजा श्री गंभीरसिंह का पत्र जो 1803 ईस्वी में जोधपुर के दोढीदार भगवानदास को लिखा पत्र से साफ प्रामाणित होता है कि उस काल में गुजरात और राजस्थान के मध्य संवाद राजस्थानी में ही होता था। तब से गुजराती और राजस्थानी लगभग 200 साल पहले ही अलग होना प्रारम्भ हुई थी लेकिन ईडर महाराजा ने यह पत्र राजस्थानी में ही लिखा है। जिसका तात्पर्य यह है कि बोलचाल ही नहीं राजकाज व पत्रव्यवहार की भाषा भी सहज रूप से दोनों जागीरों के बीच सहज भाषा राजस्थानी ही थी। राजपूताना व गुर्जर राज्य के रजवाड़े या राज अन्य किसी उत्तर भारत की भाषा को नहीं जानते थे।

!! श्री परमैस्वर जी सत्य छै!!

!!:!! स्वारूप श्री अनैक सकल सुभ ओपमा बिराजमांनानं श्री राजधीराज माहाराज श्री गंभीर सिंघ जी माहाराज कुंवार उमेदसिंघ जी दैव बचनात डोढीदार भगवानदास दी प्रसाद बंचजी....

तथा थे श्री दरबार रा सुभ चींतक हो ओर व्यास जी रो कबीलो उठे है सो काम काज गोर बरदास राषजो.....।

सभी ख्यातें तत्कालीन राज्य की भाषा अर्थात् मारवाड़ी में लिखी गई है। बांकीदास ख्यात के पृ.46, 47, 48 पर इस भांति राजस्थानी की पूर्ण ख्यात लिखी हुई है। [16]

इस पत्र की भाषा को व्यापक रूप में इस तरह से समझा जा सकता है कि मेरे परिवार में सन् 1992 तक नियमित पत्र व्यवहार इसी शैली में होता था। इस भांति लिखे पत्र सगों–गिनायतों को लिखा जाता था। मैंने स्वयं ने अपने दादोसा के कहे अनुसार इसी भाषा व शैली के कई पत्र लिखे हैं। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि इसी शैली के पत्र राज से लेकम आम गांव में लिखने का चलन पर्याप्त था। अर्थात् राजस्थानी उच्चतम राजा से लेकर एक गांव के ग्रामीणों के व्यवहार की भाषा रही है। गर्व की बात यह है कि आज भी इसी शैली का प्रयोग करते हुए राजस्थानी में ही पत्र या निमन्त्रण पत्रिका लिखी जाती है। मेरे परिवार में हुई शादी में भगवान गणेश को निमंत्रित करने के लिए फरवरी 20224 में लिखी गई निमंत्रण पत्रिका का चित्र संलग्न है।– विशिष्ट परिशिष्ट 1

एक और उदाहरणस्वरुप देखें–

'जैतमाल बारै ई बेटां ने कहियो, जगमाल मोनू मारियौ वौ जहर विसार दीजीयौ .....।

2 राजस्थानी भाषा के ऐतिहासिहक प्रमाण स्वरूप दूसरा प्रमाण 'दारोगा दस्तरी बही'– कुं. महेन्द्रसिंह नगर की सम्पादित पुस्तक के अंश है। सनद रहे कि बीकानेर व जोधपुर अभिलेखागार में कईं बहियां व सैंकड़ों अभिलेख राजस्थानी भाषा के उपलब्ध है। उसी में से एक को प्रस्तुत किया जा रहा है।

मध्यकालीन राजस्थान में विभिन्न प्रकार से सरकारी रिकॉर्ड लिपिबद्ध कर सुरक्षित किये जाते थे। ख्यात, वचनिका, रुक्का, दवावैत आदि अन्यान्य के साथ 'बही' भी प्रमुख माध्यम था। इसमें सरकारी खर्चों का समस्त लेखा जोखा लिखा जाता था। बही कईं प्रकार की होती थी। 'पट्टा बही' में राजस्थान के रियासतों में जागीरों के देने की मूल प्रति होती थी।

'हथ बही' में शासकों के निजी संस्मरणों व मंत्रणाओं के साथ धार्मिक कार्यों का उल्लेख रहता थाफ। 'हकीकत बही' में राजनीतिक, सामाजिक या धार्मिक कार्यों का दैनिक तिथिवार वर्णन होता है। बहीयों से यातायात प्रबन्धन, सूचना प्रबन्धन, पुलिस आदि कार्यों की जाानकारी प्राप्त होती है। [17]

प्रस्तुत 'दारोगा दस्तरी बही' में 17 जुलाई 1944 से 24 जुलाई 1946 ईस्वी तक एक–एक दिन का विवरण विस्तार से उपलब्ध होता है। [18]

दस्तरी री बही में तमाम सरकारी कागजात, फरमान, खलीते उनके प्रत्युत्तर, राजघराने के तमाम दस्तूर, पट्टे, सनदें, चिठ्ठियां, ओहदे, कायदे, तहरीरें, पदवी, सभी धार्मिक सामाजिक उत्सवों का विस्तार से उल्लेख लिखा जाता था। [19]

यह दारोगा दस्तरी उस समय की बोलचाल की मारवाड़ी में लिखी गई है और शब्दों की शुद्धता का ध्यान बिल्कुल नहीं रखा गया। जैसा उच्चारण बोलने वाला करता थ वैसा ही लिखा जाता था। इस बही में उर्दू व अंग्रेजी शब्दों की भरमार है जिसे ठेठ मारवाड़ी रूप में लिखा गया है। [20]

उक्त कथन केवल यही सिद्ध नहीं करता कि 1944 ईस्वी से 1946 ईस्वी के आजादी के निकट के काल में भी सभी काम राजस्थानी अर्थात् मारवाड़ी में ही होते थे बल्कि यह भी सिद्ध होता है कि असल में राजस्थानी का अपना व्याकरण था जिसकी शुद्धता का पालन किया जाना चाहिए था। लेकिन लेखक ने कहा कि ऐसा किया नहीं गया। संभावना यह भी है कि तब तक राजस्थान पर हिन्दी थोपने का कार्य प्रारम्भ हो चुका था इसीलिए क्लर्क द्वारा भाषा की शुद्धता भुला दी गई हो।

'दारोगा दस्तरी बही' में से कुछ अंश तत्कालीन राजस्थानी भाषा के प्रमाण स्वरुप यहां प्रस्तुत है–

! 'आखातीज रो उछब' आज हुवो सो वरताव हुवो–

! 'तीलक तासली रो दस्तुर' प्रभात रा सवा नव बजियां रो हुवो सो व्यास देवराज तींवरी प्रोहत देवीसिंघ – अेमनगर रो प्रोहत भेरुसिंह जोसी दुरगासंकर बो।श्री साहब पोसाख फेटों केसरीया कोट सुपेद पधराया। तींवरी प्रोहित आरती कीवी –जोसी वेदीयाश्वर सती वचन बोल अखसत वधाया। [21]

!!श्री!! !!श्री परमेश्वरजी साय छै!!

! श्री कवरांणी श्री भटियाणीजी सा जैसलमेर वाळा री सवारी पांच बजियां रा पेला जाबता री मोटर में विराज धांमली जागीरदार मनोहरसींगजी साथे ने आबुजी पदारीया... वरे बडा महाराज कंवर साब श्री हणवंतसींहजी साब व छोटा कंवर हीमतसींहजी साब वगैरे साथ में हा जीके उठे हीज है ने जीनानी सवारीयां .....मोटरां सुं पैला पधार गया.....होल में पेटी सूं बारै कडाया ने अठे गादी लठा जगनाथीया री वीछायत करने....सु ईतरा जीणा हाजर था। [22]

3 तीसरे प्रमाण के रूप में 'अचलदास खीची री वचनिका' जो शिवदास गाडण की लिखी हुई है, को लिया है। लेखक का जन्म मध्यकाल अर्थात् 14 वीं शतीं के उत्तर काल में हुआ। ये झालावाड़ के राजा अचलदास खीची के राजकवि थे। उस युग में चारण कवि, भाट, राव आदि साथ रहा करते थे व आंखों देखा हाल लिखते थे। क्योंकि स्वयं मौजूद रहकर आंखों देखा हाल लिखते थे इसलिए इस ग्रंथ की भाषा पर गौर किया जाना चाहिए कि यह समय बीतने के बाद नहीं बल्कि तत्काल ही लिखी गई। इसकी भाषा तत्कालीन राजस्थानी होने की संभावना बढ जाती है।

> शिवदास गाडण अचलदास सागै बरोबर जुद्ध में मौजूद रैयो। वचनिका सैली री रचनावां में अचलदास खीची री वचनिका भाव, भासा, अभिव्यंजना अर मौलिकता रै पाण राजस्थानी साहित्य में 'मील रो पत्थर' मानीजै। ...गागरोन गढ झालावाड़ रा धणी अचलदास अर मांडूपति आलमशाह रै बिचाळै वि. सं. 1485 में होयोड़ै जुद्ध रो ओजस्वी वरणन है। .... गद्य रै सागै पद्य रौ प्रयोग ई वचनिका सैली री खास विसेसता है। [23]

वचनिका काव्य विधा राजस्थानी भाषा की मध्यकाल की विधा रही है। साथ ही दूहा, कुंडळिया राजस्थानी छंदों के प्रकार है। वचनिका के कुछ अंश यहां प्रस्तुत है जिससे इसकी भाषा का ज्ञान होता है–

'हिन्दू राजा कवण–कवण? सकळ ही संक बंधी, सगळ कळा संपूरण, राजा नरसिंघ सारीखा। तई नरसिंघदास का कटक बंध चालितां सातारि आगलइ दळि पाणी, पाछिलई दळि कादम। तई कादम–कइ ठाहि खेह उडती जाइ।

दूहो

अेकइ वन्नि वसंतड़ा, अेवड अंतर काइ?।

सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ।।

कुंडळियो

गइवर गळइ गळत्थियउ, जहं खंचइ तंह जाइ।।

सीह गळत्थण जइ सहइ, तउ दइ लक्खि विकाइ।।

ते राजा नरसिंघदस सारीखा। बतीस सहस साहण रिण–खेति मेल्हि चाल्यउ। मदोनमत्त हस्ती मेल्हीं चाल्मउ। आपण जाइ समंदइ घाल्यउ।

उपरोक्त अंश राजस्थान राज्य की 12वीं कक्षा की राजस्थानी भाषा की पुस्तक में से लिया है। इसके संपादकीय में लिखा है कि–

राजस्थानी भासा जुगां जूनी अर घणी सिमरध है। राजस्थानी री अखूंट साहित्य संपदा, भासा री व्याकरण, उणरी न्यारी–न्यारी विसेसतावां, सबद भंडार जिणमें दो लाख नैड़ा सबदां रा अरथ है। जूनी मुड़िया लिपि रै पछै देवनागरी लिपिा इणरै कनै है। बारवीं कक्षा वास्तै 'साहित्य सुजस भाग –2 में राजस्थानी भासा री टाळवीं रचनावां लिरीजी। 'अचलदास खीची री वचनिका' जूनै गद्य रौ नामी दाखलौ है। [24]

उपरोक्त सभी प्रमाण राजस्थानी को सदियों के व्यवहार की भाषा सिद्ध करते हैं। वर्तमान में भले राजस्थानी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है लेकिन पूर्व में इसकी स्वयं की लिपि थी जिसे 'मुडिया लिपि' कहा जाता था। इसमें अक्षरों को कुछ मोड़कर लिखा जाता था। शिरोरेखा नहीं थी व शब्द जोड़कर लिखे जाते थे। 'ष' के स्थान पर 'ख' को प्रयोग मिलता है। यह साहित्य ही नहीं व्यापार वाणिज्य की भी लिपि थी। व्यहवहार की भाषा होने के कारण संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद राजस्थानी में ही किया जाता था जिसे हर वर्ग की जनता समझ सके।

देवनागरी लिपि ई राजस्थानी लिपि है। मुडिया इण री जूनी लिपि ही। राजस्थानी री लिपि राजस्थाान री रियासतां बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, कोटा, उदयपुर री ही जिणरा अभिलेख बीकानेर अभिलेखागार में सुरक्षित है। सब्दां री लिखावट समझनै राजस्थानी रो मध्यकालीन अर आजादी रै पैलां तांई रो लिखावट रूप समझयो जा सकै। राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में आ मध्यकालीन राजस्थानी लिपि रो रूप त्यार करीजियो है।[25]

पुरालेखों, शिलालेखों के अतिरिक्त मध्यकाल में भी राजस्थानी साहित्य कईं रूपों में मिलता है। गद्य और पद्य की विभिन्न व विलक्षण विधावों में साहित्य की प्राप्ति इस भाषा की समृद्धता सिद्ध करती है। उस समय जब हिन्दी का जन्म भी नहीं हुआ था तब से ही राजस्थानी इतनी विस्तृत चलन में थी कि संस्कृत के ग्रंथों का राजस्थानी में सरलीकरण किया जाता था। [26]

निष्कर्ष–

ठिकाना पाल री ख्यात' जिसमें संवत् 1415 में राव जैतमाल की मृत्यु से लेकर पाल के ठाकुर रणजीतसिंह सं. 1952 तक का वृत्तांत प्रस्तुत किया है तथा सन् 1428 में लिखी 'अचलदास खीची री वचनिका' व 'दारोगा दस्तरी बही' जिसका रचना काल 12 अप्रैल 1946 से जुलाई 1947 तक है। ये तीनों प्रमाण अलग युगों हैं लेकिन इनके सृजन की भाषा राजस्थानी है।

यह सिद्ध करती है कि सन् 1428 से लेकर जुलाई 1947 तक आजादी के समय भी राजस्थान में हर स्तर पर केवल राजस्थानी ही चलन में थी। सभी राजकाज और प्रशासन के साथ आम जनता केवल राजस्थानी भाषा का ही प्रयोग करती थी। हिन्दी का कहीं नाम निशान भी नहीं था। हिन्दी भाषा को जबरन स्थापित करने के लिए राजस्थानी को हटाया जाना प्रारम्भ किया गया व हिन्दी माध्यम की शिक्षा द्वारा बालकों को यह कहा गया कि राजस्थानी कोई भाषा नहीं है। इसे नहीं बोलना चाहिए। इसी का यह घोर प्रयास प्रारम्भ किया गया । प्राथमिक शिक्षा से ही यह 'राजस्थानी भाषा को हीन' मानने की बातें बालकों के दिमाग में भरी गई। हिन्दी शिक्षा के लिए राजस्थान से बाहर से अध्यापकों को नियुक्त किया गया क्योंकि राजस्थान में हिन्दी भाषा का निशान भी नहीं था। अध्यापक ही नहीं समस्त प्रशासनिक ओहदों पर हिन्दी पट्टी वालों को नियुक्त किया जाने लगा। चूंकि तब हिन्दी कोई जानता ही नहीं था तो सभी नियुक्तियां उत्तर प्रदेश–मध्य प्रदेश के लोगों की की गई। उच्च स्तर पर दूसरे राज्यों वालों को देख व प्राथमिक शिक्षा में राजस्थानी को पूर्ण रूपेण हटाकर हिन्दी अनिवार्य की जिससे राजस्थानियों में राजस्थानी भाषा के प्रति हीन भावन तेजी से फैलने लगी। सरकार इसी का प्रयास कर रही थी व सफल भी होने लगी। सरकारी कानून के आगे आमजन की भावनाओं व भाषा के अधिकार का हनन किया गया व राजस्थानी छोड हिन्दी पढने को मजबूर किया गया। नयी भाषा को सीखने में बहुत समय लगा तब तक सभी उच्च पदों पर हिन्दी पट्टी आसीन हो चुकी थी। मातृभाषा राजस्थानी छोड एकदम नयी भाषा पढकर प्रशासन में नियुक्त होने तक कईं दशक निकल गये व राजस्थान पिछड़ता गया।

उपरोक्त मेरा पत्र कहता है कि हमारी राजस्थानी भाषा को केन्द्र सरकार संवैधानिक मान्यता दे तथा राज्य में प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा राजस्थानी में हो। मातृभाषा में पढकर ही राजस्थानवासी वास्तविक प्रगति कर सकते है। ध्यात्व्य है कि मातृ भाषा में शिक्षा राजस्थानवासियों का मौलिक अधिकार भी है।

संदर्भ–

1. राजस्थानी व्याकरण , बी.एल. माली अशांत पृ 11, 2014
2. राजस्थानी भाषा : भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. मनमोहन स्वरूप माथुर पृ.7, 2012

3. राजस्थानी का लेखन और देवनागरी लिपिः श्रीकृष्ण जुगनूः विकल्प पत्रिका सितम्बर 2015
4. एकलिंग पुराण संपादन और पीटर पिटर्सन, भावनगर इंस्क्रीप्शंस– द इस्क्रीप्शंस ऑफ एकलिंगजीः श्रीकृष्ण जुगनू पृ. 497
5. पुरालेखा स्रोत, राहुल तनेगारिया **www.ignca.gov.in** राजस्थान पुरालेखा स्रोत।
6. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी, ठाकुर भवानीसिंह ठिकाना पाल जोधपुर, 2003– पृ. 16 भूमिका में।
7. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी पृ. 11 भूमिका में, 2003
8. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी पृ. 13 भूमिका में, 2003
9. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी पृ. 11 भूमिका में, 2003
10. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी पृ. 11 भूमिका में, 2003
11. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी पृ. 11 भूमिका में, 2003
12. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी पृ.2, 2003
13. ठिकाना पाल री ख्यात, डॉ. विक्रमसिंह भाटी पृ.2, 2003
14. ठिकाना पाल री ख्यात, विक्रम सिंह भाटी पृ.90, 2003
15. ठिकाना पाल री ख्यात, विक्रम सिंह भाटी पृ.118, 2003
16. राव जोधा पूर्व मारवाड़ का इतिहास – डॉ. महेन्द्रसिंह नगर पृ. 46,47,48, 2019
17. पुरालेखा स्रोत, राहुल तनेगारिया **www.ignca.gov.in** राजस्थान पुरालेखा स्रोत।
18. दारोगा दस्तरी बही, कुं. महेन्द्रसिंह नगर पृ. 44, 1996
19. दारोगा दस्तरी बही, कुं. महेन्द्रसिंह नगर पृ. 45, 1996
20. दारोगा दस्तरी बही, कुं. महेन्द्रसिंह नगर पृ. 50, 1996
21. दारोगा दस्तरी बही, कुं. महेन्द्रसिंह नगर पृ. 239, 1996
22. दारोगा दस्तरी बही, कुं. महेन्द्रसिंह नगर पृ. 269–70, 1996
23. साहित्य सुजस भाग 2, डॉ. प्रकाश अमरावत, डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित पृ. 17
24. साहित्य सुजस –2, डॉ. प्रकाश अमरावत पृ. 7, 2018

विशिष्ट परिशिष्ट 1 :– 26 फरवरी 2024 को हुए विवाह आमन्त्रण पत्रिका की फोटो।

25– राजस्थानी भाषा विज्ञान, बी. एल. माली 'अशान्त', पृ.154, 2020

26–राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग 1, संपादक पं. नरोत्तमदासजी स्वामी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, 1997 पृ. 0

27 विशिष्ट –